नये सम्राट नारुहितो ने संभाला जापानी एकता का भार

जापान परम्पराओं की रक्षा और निर्वाह का देश! भारत में यदि कोई प्राचीन परम्पराओं को संभालने की बात करता है तो कहा जाता है कि ये लोग अतीतजीवी हैं! भविष्योन्मुखी होने के लिए अतीत को त्यागना या उसका अपमान करना जरूरी नहीं यह जापान ने सिद्ध किया! वहां ढाई हजार साल से भी पुरानी राजवंशीय परम्परा आज भी फलफुल रही है तथा 30 अप्रैल को वहां के सम्राट अकिहितो ने 85 वर्ष की आयु में स्वास्थ्य कारणों से सिंहासन त्याग किया और अगले दिन यानी एक मई को उनके 59 वर्षीय पुत्र राजकुमार नारूहितो ने जापान के 126 वें सम्राट के रूप में पद संभाला। इसके साथ ही सदाबहार पुष्प सिंहासन (गुलदाउदी) पर बैठे नये सम्राट ने जापान के सूत्र को अपनाते हुए नया युग प्रारंभ किया!

सम्राट नारूहितो आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़े हैं तथा उनकी पत्नी साम्राज्ञी मसाको हार्वर्ड विश्वविद्यालय से शिक्षित हैं! वे जापान के ऐसे पहले सम्राट हैं जिनका जन्म दूसरे विश्वयुद्ध के बाद हुआ और पश्चिमी तौर तरीकों तथा शिक्षा में निष्णात हैं! वे तुलना में युवा तथा बेहद प्रगतिशील विचारों के हैं और जिस समय जब जापान आर्थिक मंदी, घटती जन्म दर, बूढ़े लोगों की बढ़ती संख्या तथा महिला-पुरुष भेद जैसी समस्याओं से गुजर रहा है सम्राट नारुहितो पर जापान के लोगों की बहुत आशाएं टिकी हैं!

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 1945 तब जब अमेरिका ने जापान पर अणु बम गिराकर उसे परास्त किया, वहां के सम्राट को देव स्वरूप माना जाता था। अणु बम से हुई तबाही तथा पराजय से टूट चुके सम्राट हीरोहितो ने दैवी स्वरूप का प्रभामंडल हटाने की घोषणा की दी! जापान को नये सिरे से बनाने का काम तथा टूटते मनोबल को उठाने की जिम्मेदारी हीरोहितो तथा उनके बेटे राजकुमार अकिहितो ने संभाली! हिरोशिमा का घाव मिटना मुश्किल था! अमेरिका ने जापान का नया संविधान कुछ इस प्रकार बनवाया कि सम्राट के पास सिर्फ दिखावटी संवैधानिक अधिकार रहे! फिर भी जापानी जनता के मन में अपने सम्राट के प्रति सम्मान और उनकी महानता का बोध तनिक भी कम नहीं हुआ! जापान पुन: उद्योग, व्यापार, चिकित्सा तथा प्रत्येक नागरिक को उन्नति और समृद्धि का अवसर देने में विश्व में शिरोमणि बना! एक करोड़ तीस लाख की आबादी, लगातार भूकंपों को झेलने वाला चीन से आक्रामक तेवर भी संभालने वाला जापान केवल आत्मरक्षा सेना रख सकता है! लेकिन जापान के प्रति व्यक्ति आय और औसत आयु विश्व में सर्वोपरि है! मेड इन जापान का अर्थ आज भी दुनिया में सर्वाधिक विश्वसनीय तथा दीर्घकालीन बिना तकलीफ चलने वाले उत्पादों के लिए जाना जाता है।

भारत-जापान संबंध सम्राट नारुहितो के काल में और बेहतर बनेंगे, यह स्वाभाविक विश्वास है क्योंकि जापान के साथ भारत के संबंध व्यापार, राजनीति और कूटनीति से परे पारस्परिक विश्वास तथा धार्मिक, लोकतांत्रिक और सभ्यतामूलक सूत्रों के सांझेपन से सिंचित हैं! जापान का बहुसंख्यक समाज शिंतो धर्म को मानता है जो हिंदू धर्म से बहुत कुछ मिलताजुलता है! पुनर्जन्म, माता-पिता का सम्मान और पारिवारिक मूल्य, वर्ष में एक बार पितरों का स्मरण और उन्हें पुष्पांजलि, प्रकृति की पूजा जैसे संस्कार शिंतो धर्म में बहुत गहराई से विद्यमान हैं! भारत की फिल्मों में भी विभिन्न रूपों और प्रकारों से जापान बड़ी आत्मीयता के साथ अभिव्यक्त होता रहा है! तमिलनाडु के महान अभिनेता रजनीकांत जापान के बहुत लोकप्रिय हीरो माने जाते हैं और उनका वहां बड़ा आदर है! बौद्ध मत जिन भारतीय भिक्षुओं के माध्यम से जापान में प्रसारित हुआ उनकी स्मृति में क्योटो के पास एक विशाल मंदिर है तथा आज भी वहां सरस्वती तथा गणपति की पूजा होती है!

भारत में जापानी सहयोग से सुजुकी मोटर्स ने संजय गांधी के साथ मारूति कार बनाना शुरू किया और सब मानते हैं कि मारूति 800 ने भारत की सड़कों का नक्शा ही बदल दिया! दिल्ली सहित अनेक प्रदेशों में मेटरो रेलगाड़ियां जापान की देन हैं तो भारत की पहली बुलेट टेन भी पूर्णतया जापानी सहयोग से ही निर्मित हो रही है! नेताजी सुभाषचंद्र बोस तथा क्रांतिकारी रासबिहारी बोस जापान के सामान्य जन के भी तर बेहद आदर और सम्मान के साथ याद किए जाते है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने जापान की सहायता से ही अंडमान-निकोबार आजाद करवाया था और उसका नाम शहीद और स्वराज रखा था।

जापान के साथ वर्तमान समय में प्रधानमंत्री मोदी और जापानी प्रधानमंत्री शिंजो आबे के मध्य असाधारण आत्मीय संबंधों ने एक नया अध्याय प्रारंभ किया! जापान यात्रा के समय नरेंद्र मोदी तत्कालीन सम्राट अकिहीतो से राजमहल में विशेष चर्चा के लिए आमंत्रित किए गए थे! नरेंद्र मोदी ने जापान में एक सशक्त और अत्यंत विश्वसनीय आत्मीय मित्र के नाते बहुत गहरी छाप छोड़ी है जिसके परिणामस्वरूप रक्षा क्षेत्र में जापान के साथ वार्षिक मलाबार सैन्य अभ्यास और नागरिक परमाणु सहयोग संभव हो पाया है!

जापानी फिल्मों के महानायक अकिरा कुरोसोवा, यासुजिरो तथा ताकाशी शिमीजु ने सत्यजीत रे और गुरुदत्त जैसे भारतीय महान निर्देशकों को प्रभावित किया! हमारे जैसे संबंध जापान से हैं वैसे शायद ही किसी अन्य देश से हों! सम्राट नारुहितो जापान की सामान्य जनता के महानायक और पूजित प्रतीक हैं! जापान में सम्राट जीवनपर्यंत पद पर बने रहते हैं! केवल सम्राट अकिहीतो पिछले दो सौ साल में पहले ऐसे सम्राट हुए जिन्होंने अपने जीवन काल में ही सिंहासन त्यागा! सम्राट नारुहितो के साथ भारतीय जनता और विचारकों के संबंध बढ़ें या राजनीतिक और कूटनीतिक संबंधों के बढ़ने से भी ज्यादा जरूरी है!

बदलते समय में आखिर क्या है श्रमिक आंदोलनों का भविष्य

यों तो श्रम दिवस के नाम पर एक दिन का सवेतनिक अवकाश और कहने को कार्यशालाएं, गोष्ठियों व अन्य आयोजनों की ओपचारिकताएं पूरी कर ली जाती है पर आज असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की समस्याओं को लेकर वह गंभीरता नहीं दिखाई दे रही जो होनी चाहिए।

वैसे देखा जाए तो श्रमिक संगठन और श्रमिक आंदोलनों का दौर समूची दुनिया में कहीं नेपथ्य में चला गया है। इसका एक प्रमुख कारण दुनिया में आर्थिक उदारीकरण का दौर और सोवियत रुस में साम्यवाद का पराभव माना जा सकता है। हमारे देश में 90 के दशक के उदारीकरण के दौर के बाद से श्रमिक आंदोलनों का दौर करीब करीब लुप्त ही हो गया। कहने को आज भी श्रमिक संगठन है और इसमें भी कोई दो राय नहीं कि श्रमिक संगठनों की आज भी प्रासंगिकता है। दरअसल समय के बदलाव को नहीं समझने के कारण ही श्रमिक आंदोलनों पर प्रश्न चिन्ह उभरा और श्रमिकों का इन आंदोलनों से मोह भंग हुआ। दरअसल श्रमिक आंदोलन के नाम पर अपने वर्चस्व को कायम करने की होड या फिर अहम के कारण श्रमिकों और श्रमिक आंदोलनों को नुकसान हुआ। एक समय था जब कल कारखानों के बाहर श्रमिकों के टेंट आम होता था और नारों की गूंज आम होती थी। पर आज ऐसा कम ही दिखाई देता है। आज यह भी समझ आ गई है कि अधिक लंबा व हठधर्मिता का आंदोलन नहीं चल सकता। यही कारण है कि बैंकों का एकीकरण जैसी बड़ी घटनाएं भी आम होती जा रही है। इतना सब कुछ होने के बाद भी यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि देश में अमीर गरीब की खाई बढ़ गई है और गैरसंगठित श्रमिक की हालत बदतर होती जा रही है। संगठित वर्ग चाहे वह सरकारी कर्मचारियों का हो या गैरसरकारी संस्थानों का वे अपने संगठन के बल पर सुविधायुक्त होते जा रहे हैं। समस्याएं तो अधिक गैर संगठित वर्ग के सामने हैं।

यों तो श्रम दिवस के नाम पर एक दिन का सवेतनिक अवकाश और कहने को कार्यशालाएं, गोष्ठियों व अन्य आयोजनों की ओपचारिकताएं पूरी कर ली जाती है पर आज असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की समस्याओं को लेकर वह गंभीरता नहीं दिखाई दे रही जो होनी चाहिए। हांलाकि सरकार असंगठित वर्ग के लिए भी सामाजिक सुरक्षा व अन्य योजनाएं लेकर आ रही हैं पर उनका प्रभाव अधिक नहीं दिखाई दे रहा है। मजे की बात यह है कि पिछले दिनों की विधानसभा चुनावों और अब चल रहे लोकसभा चुनावों में राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों के केन्द्र में भी किसान और बेरोजगार युवा तो दिखाई दे रहे हैं पर असंगठित वर्ग के लिए कोई ठोस रोडमेप दिखाई नहीं दे रही। सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती मंहगाई से सबसे अधिक प्रभावित असंगठित क्षेत्र के कामगार ही होते हैं। जहां तक कर्मचारियों का प्रश्न है उनको मंहगाई भत्ते के माध्यम से थोड़ी बहुत भरपाई हो जाती है वहीं संगठित क्षेत्र के श्रमिकों को भी कुछ राहत मिल ही जाती है। ले देकर असंगठित क्षेत्र के कामगारों के सामने दो जून की रोटी जुटाना मुश्किल भरा काम होता जा रहा है। असंगठित क्षेत्र में भी खास तौर से दुकानों पर, ठेलों पर, चाय की स्टॉलों, होटलों-ढाबों पर काम करने वाले आदमियों की मुश्किलें अधिक है। इसके अलावा रिक्सा-टेक्सी चलाने वाले, माल ढोने वाले, कारिगर, पलम्बर, सेनेटरी का काम करने वाले, बिजली सुधारने वाले, परिवार पालने के लिए रेहडी, थडी या साइकिल आदि से सामान बेचने वाले और ना जाने कितनी ही तरह के काम करने वाले असंगठित क्षेत्र में काम करने वालों की समस्याओं का अंत नहीं हैं। रोजमर्रा के काम करने वाले लोगों की समस्याएं अधिक है। कल कारखानों में भी ठेके पर श्रमिक रखने की परंपरा बनती जा रही है और तो और अब तो सरकार भी अनुबंध पर रखकर एक नया वर्ग तैयार कर रही है। गांवों में खेती में आधुनिक साधनों के उपयोग व परंपरागत व्यवसाय में समयानुकूल बदलाव नहीं होने से भी गांवों से पलायन होता जा रहा है।

इन्स्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन डवलपमेंट नई दिल्ली के अनुसार एक मोटे अनुमान के अनुसार देश में केवल 7 प्रतिशत श्रमिक ही संगठित क्षेत्र में है। 93 फीसदी कामगार असंगठित क्षेत्र में है। जानकारों के अनुसार असंगठित क्षेत्र के कामगारों में भी 60 प्रतिशत कामगारों की स्थित बिहद चिंताजनक मानी जाती है। करीब 50 फीसदी श्रमिक केजुअल वेज पर काम कर रहे हैं वहीं केवल 16 प्रतिशत मजदूरों ही नियमित रोजगार से जुड़े हुए हैं। खेती में आधुनिकीकरण के चलते मानव श्रम की कम आवश्यकता के कारण यही कोई 36 फीसदी लोगों ने खेती पर निर्भरता छोड़ अन्य कार्यों को अपनाया है। गृह उद्योगों का जिस तरह से विस्तार होना चाहिए था वह अपेक्षाकृत नहीं हो पा रहा है। इसके चलते सामाजिक विसमता बढ़ती जा रही है। हांलाकि महात्मा गांधी रोजगार गॉरन्टी योजना मनरेगा में निश्चित रोजगार की बात की जा रही है पर इसमें भी रोजगार के क्षेत्र में विसमता पनपी है।

एक समय था जब मजदूर आंदोलन पीक पर था पर उदारीकरण के दौर व साम्यवाद के पतन के बाद से स्थिति में बदलाव आया हैं हांलाकि साम्यवादी या यों कहें कि वामपंथी आज भी वामपंथ का पराभव या यों कहें कि असर कमतर मानने को तैयार नहीं है पर सचाई सामने है। आज वामपंथ और श्रमिक आंदोलन कुंद हो गए हैं। दरअसल एक समय जब श्रमिक आंदोलन या वामपंथ प्रभावी था उस जमाने में श्रमिक आंदोलनों का भटकाव और श्रमिक आंदोलन कल कारखानों और श्रमिकों से रोजगार छिनने का कारण बनने लगा तो धीरे धीरे श्रमिक आंदोलनों से श्रमिकों का मोहभंग होने लगा। जो आंदोलन श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए होता वह आंदोलन हठधर्मिता या यों कहे कि झुकने को तैयार नहीं होने के कारण औद्योगिक प्रतिष्ठानों में स्थाई तालाबंदी और उससे जुड़े श्रमिकों के रोजगार को खत्म करने वाला बनने लगा तो यह घोर निराषा का कारण बन गया। वास्तविकता तो यह है कि मजदूर आंदोलन आज लगभग दम तोड़ता जा रहा है। इसके कई कारण रहे हैं। श्रमिकों नेताओं ने समय रहते सोच में बदलाव लाने पर जोर नहीं दिया और इसका प्रभाव मजदूर आंदोलनों को पीछे धकेलने के रुप में सामने आया। एक सोच यह भी विकसित हुआ कि मजदूर आंदोलन तेजी से होने वाले औद्योगिक विकास में रुकावट डाल रहा है और उसके परिणाम स्वरुप श्रमिक आंदोलन की धार धीरे धीरे कुंद पड़ने लगी।

देश के आर्थिक विकास में असंगठित श्रमिकों की भागीदारी को नकारा नहीं जा सकता। सरकार द्वारा समय समय पर इनके लिए सामाजिक सुरक्षा उपायों की घोषणा भी की जाती रही है। पर इसका पूरा लाभ असंगठित श्रमिकों को प्राप्त नहीं हो पाता है। असंगठित श्रमिकों के कौशल को विकसित करने के लिए नियमित प्रशिक्षण की व्यवस्था, कच्चे माल की उपलब्धता, बीमा-स्वास्थ्य जैसी सुरक्षा और विपणन सहयोग के माध्यम से असंगठित क्षेत्र के बहुत बड़े वर्ग को लाभान्वित किया जा सकता है। हालांकि सरकार द्वारा अफोर्डेबल आवास योजना व अन्य योजनाएं संचालित की जा रही है। यदि थोड़े से प्रयासों को गति दी जाती है तो असंगठित क्षेत्र के कामगारों के हितों की भी रक्षा हो सकती है और उन्हें सामाजिक सुरक्षा कवच देकर अच्छा जीवन यापन की सुविधा दी जा सकती है। इससे देश में लघु उद्योग, सेवा क्षेत्र, हस्तशिल्प, परपंरागत रोजगार, दस्तकारी आदि को बढ़ावा मिल सकता है समाज में संगठित और असंगठित क्षेत्र के बीच बढ़ रही खाई को पाटने में सहायता मिल सकती है। सरकार और गैरसरकारी संगठनों को इस दिशा में ठोस रोडमेप बनाना होगा ताकि एक बड़ा और जरुरतमंद वर्ग विकास की मुख्य धारा से जुड़ सके।